

स्कंदित वि. (तत्.) 1. जिसका स्कंदन हुआ हो 2. क्षरित, बहा हुआ 3. निकला या गिरा हुआ।

स्कंदी वि. (तत्.) 1. स्कंदन करने वाला 2. उछलने-कूदने वाला 3. बहने वाला 4. गिरने वाला।

स्कंदोपनिषद स्त्री. (तत्.) एक उपनिषद का नाम।

स्कंध पुं. (तत्.) 1. कंधा, मोढ़ा 2. वृक्ष के तने का वह ऊपरी भाग जिसमें से डालियाँ निकलती हैं 3. कोई ऐसा मूल और बड़ा अंग जिसके साथ दूसरे छोटे अंग या उपांग लगे हों 4. शाखा, डाल 5. समूह, झुंड 6. वह स्थान जहाँ विक्रय के लिए बहुत सी चीजें जमा रहती हैं, भंडार 7. ग्रंथ का वह विभाग जिसमें कोई पूरा विषय हो 8. शरीर 9. युद्ध 10. हिंदू दर्शन शास्त्र में शब्द, स्पर्श, रूप रस और गंध 11. बौद्ध दर्शन में रूप, वेदना, विज्ञान, संज्ञा और संस्कार 12. मार्ग, रास्ता 13. राज्याभिषेक के समय काम आने वाली सामग्री 14. राजा 15. आचार्य।

स्कंधक पुं. (तत्.) काव्य. आर्या गीत या स्वधा नामक छंद का एक नाम।

स्कंध चाप पुं. (तत्.) बहंगी, वह लकड़ी जिसके दोनों सिरों पर लटकाकर बोझ ले जाए जाते हैं।

स्कंधज पुं. (तत्.) 1. वट वृक्ष, बरगद का पेड़ 2. सलई, शल्लकी वृक्ष।

स्कंध तरु पुं. (तत्.) नारियल का पेड़।

स्कंध देश पुं. (तत्.) 1. कंधा 2. हाथी के शरीर का वह भाग जिस पर महावत बैठता है 3. तना 4. गूलर का पेड़।

स्कंधपंजी स्त्री. (तत्.) वह पंजी या बही जिसमें स्कंध या भंडार में रखी हुई वस्तुओं का विवरण हो।

स्कंधपथ पुं. (तत्.) पगडंडी।

स्कंधपरिनिर्वाण पुं. (तत्.) बौद्धों के अनुसार शरीर के पाँचों स्कंधों का नाश, मृत्यु।

स्कंध-पाल पुं. (तत्.) वह अधिकारी जो किसी स्कंध या भंडार की देख रेख आदि के लिए नियत हो।

स्कंध फल पुं. (तत्.) 1. नारियल का पेड़ 2. गूलर।

स्कंध बीज पुं. (तत्.) ऐसा वृक्ष जिसके स्कंध से ही शाखाएँ निकलकर भूमि के अंदर पहुँचकर नए वृक्षों का रूप धारण करती हैं जैसे- बरगद का पेड़।

स्कंध मणि पुं. (तत्.) एक प्रकार का यंत्र या ताबीज।

स्कंध मार पुं. (तत्.) बौद्धों के चार मारों अर्थात् कामदेवों में से एक।

स्कंध रुह पुं. (तत्.) वट वृक्ष, बरगद का पेड़।

स्कंधवाह पुं. (तत्.) 1. वह जो कंधों पर माल ढोता हो 2. ऐसा पशु जो कंधों के बल बोझ खींचता हो। जैसे- बैल, घोड़ा आदि।

स्कंधवाहक वि. (तत्.) कंधे पर बोझ उठाने वाला।

स्कंधा स्त्री. (तत्.) 1. पेड़ की डाल, शाखा 2. बेल, लता।

स्कंधाक्ष पुं. (तत्.) कार्तिकेय के अनुसार देवताओं का एक गण।

स्कंधावार पुं. (तत्.) 1. सेना का शिविर, पड़ाव, छावनी 2. सेना 3. यात्रियों, व्यापारियों आदि का शिविर।

स्कंधी वि. (तत्.) 1. स्कंध युक्त, कंधों वाला 2. शाखाओं वाला वृक्ष।

स्कंधोपनेय पुं. (तत्.) राजाओं के मध्य होने वाली एक प्रकार की संधि जिसमें नियत या निश्चित बातें क्रम-क्रम से और कुछ दिनों में पूरी होती थी।

स्कंध्य वि. (तत्.) स्कंध संबंधी, स्कंध का।

स्कंभ पुं. (तत्.) 1. खंभा, स्तंभ 2. परमेश्वर जिसने संपूर्ण विश्व को धारण किया हुआ है 3. वह कील जिसके ऊपर कोई वस्तु घूमे।

स्कंभन पुं. (तत्.) सहारा लगाने की क्रिया।